साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 47, अक्टूबर(द्वितीय) , 2018

प्रकृति में वेदना है और सम्वेदना भी है

लेखक: किशोर मकवाणा
अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

प्रकृति ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है। कृति है पर आकृति नहीं।
प्रकृति तो मानव स्वभाव की प्रतिकृति है।
प्रकृति निराकार,निर्विकार है।
पृथ्वी के अणु अणु में,कण कण में
उसका अदम्य आविष्कार है।
प्रकृति में रहस्य भी है
और हास भी है।
प्रकृति में सृजन भी है
और स्पंदन भी है।
प्रकृति में स्वर भी है
और सूर भी है।
प्रकृति में पर्व भी है
और प्राण भी है।
क्या नहीं है प्रकृति में?

ईश्वर की प्रतिनिधि ऐसी प्रकृति में ईश्वर के सारे गुण हैं। आवश्यकता है,मात्र उसकी अनुभूति करने की सम्वेदना की और उसे देखने की दृष्टि की।
प्रकृति को जाना जा सकता है और उसका आनंद भी उठाया जा सकता है।
प्रकृति की प्रत्येक गतिविधि में चैतन्य है,उसकी अनुभूति करें।
प्रकृति ईश्वर का संगीत है,उसे सुनने के लिए अपने कान तेज करें।
प्रकृति सुंदरता का खजाना है,उसे निहारने के लिए आँखें खोलें।

प्रकृति परमात्मा की प्राप्ति की सीढ़ी है।
अत: सावधान! हमारी कोई कृति प्रकृति को ठेस न पहुंचायें.....
एक प्रसंग पथदर्शक होगा।

``महर्षिजी, मैं बड़ी तकलीफ में हूँ!'' दक्षिण भारत के महान संत रमण महर्षि के चरणों में नतमस्तक एक युवती ने कहा।

``क्या है बेटा?''

`` बाबा,मैंने आपके प्रति भक्तिभाव के कारण आपकी छवि पर एकलाख बेलपत्र अर्पण करने का संकल्प किया है। मैं आपकी भगवान की तरह पूजा करती हूँ और तीन महीने में उस संकल्प को पूरा करने का निर्णय किया है....उस स्त्री ने कहा।

`ओह! बाबा व्यथा के साथ कहा: ``पर मेरी बच्ची! मैं कोई भगवान नहीं हूँ!''

बाबा! सवाल मेरी श्रद्धा का है। मेरा अहम सवाल यह है,कि मैं जहां रहती हूँ,वहाँ बेलपत्र मिलते नहीं हैं,मैंने पचासहजार बेलपत्र तो अर्पण कर ही दिये हैं अरन्तु उष्णकाल होने के कारण बेलपत्र झड गए हैं।-स्त्री ने कहा।

``इस मामले में मैं क्या कर सकता हूँ? मैं कोई जादुई चमत्कार से पेड़ पर पत्ते तो उगा नहीं सकता।'' महर्षि ने कहा।

``न बाबा, मैं आपके पास कोई चमत्कार कराना नहीं चाहती। मुझे अपना संकल्प पूरा करने का कोई अन्य मार्ग दिखाइये।''

``हाँ, उसका इलाज तो है! बेलपत्र के अतिरिक्त तुम पचास हजार बार तुम्हारे शरीर पर चिकुटियाँ काटो!''

``लेकिन बाबा! यह तो मेरे लिए असह्य कष्टदायी होगा।''

``ठीक है, ऋक्ष भी ऐसा ही अनुभव कर रहा होगा न? उसके प्रति क्रूर मत बनो। क्रूरता ही पाप है। किसी भी बहाने ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए।'' महर्षि ने प्रबोधना की।

यह है,प्रकृति के प्रति संवेदना की गुहार! महापुरुष अपनी दिव्य आत्मिक शक्ति और दृष्टि से प्रकृति से बात कर सकते हैं।

हमारे संत और संस्कृति ने हमेशा प्रकृति को महत्त्व प्रदान किया है। प्रकृति का जतन करने में ही परमार्थ का अनुभव किया है।

एक कवि ने कहा है,NATURE IS A POEM WITHOUT WORDS!''

शब्द रहित-नि:शब्द भी सतत गुंजार कर रही प्रकृति हमारे चारोंओर है। उसकी धडकन सुनें....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें